

MBh. 13, 3747. *aufschiessen*: *मुद्गमुत्पतितम्* KāND. Up. 6, 8, 3. *sich aufmachen, schnellig einen Ort verlassen* At. Br. 5, 28. *उत्पतितसकृद्दिशाद्याधिर्भित्तिपीडितात्* MBh. 12, 5224. *herausseilen, herausspringen, heraussteigen*: उत्पेतुः सकृसा स्वभ्यो गृहेभ्यः पुरुषर्षभाः Hariv. 10293. उत्पयात् रथाद्दीरो गरुत्मानिव वीर्यवान् 6683. अप्सु निर्मथनादेव रसात्-स्माद्दरस्त्रियः। उत्पेतुः R. 1, 43, 33. अश्मनिष्येषोत्पतितानल Ragh. 4, 77. उत्पतत्याशु वृत्ताद्धमति पवनधूतः सर्वतो ऽग्निर्वनात्ते R. 1, 26. अविध्य-त्पथिवीम् — उत्पयात् ततो धारा वारिणः *hervorsprudeln* MBh. 6, 5785. Blut aus der Wunde Çat. Br. 3, 1, 2, 16. 8, 2, 14. गर्भादुत्पतिते जतौ *aus dem Mutterleibe treten* Hit. 1, 170. *entkommen, entrinnen*: (मृगः) व्याधानां शरगोचरदत्तज्वनेनोत्पत्य (v. l. für उत्सृत्य) Spr. 923. — 2) *sich erheben* so v. a. *entstehen*: अर्तिज्ञं मरुशब्दं ब्राह्मणास्य निवेशने। भृश-मुत्पतितम् MBh. 1, 6111. मृगपतेरुत्तरो लोकभयंकर उदपतत् Bhāg. P. 5, 8, 1. शोकमुत्पतितम् 3, 4, 23. — Vgl. उत्पत् fgg., उत्पतितरू fgg., उत्पात. — *caus. auffliegen machen*: (उषाः) उत्पातयति पक्षिणः RV. 1, 48, 5. *aufsteigen machen*: त्वचो धूमं पर्युत्पातयामि AV. 12, 3, 33. *aufheben*: तैर्दण्डको मृत इव ज्ञावां संस्कारणायोत्पातितः Verz. d. Oxf. H. 156, a, 26. — *desid. auffliegen wollen*: उदपिपतिषत् Çat. Br. 10, 2, 1.

— *अनूद् nach Jmd (acc.) auffliegen, — sich in die Luft erheben, hernach aufspringen*: उत्पतत्तमनूत्पेतुः सर्वे ते R. 5, 64, 24. Çat. Br. 11, 3, 1, 4.

— *अभ्युद् auffliegen zu, aufspringen*: सो ऽभ्युदपतत्सद्यो विद्याधरो नामः Kathās. 22, 144. कृत्तस्य निधनाकाङ्क्षी तूर्णमभ्युत्पयात् ह Hariv. 4114. Vgl. अभ्युत्पतन. — *caus. auffliegen machen zu (acc.)* Çat. Br. 1, 8, 2, 14.

— *प्रोद् auffliegen*: प्रोदपाति नभस्तेन Bhātt. 13, 106.

— *समुद् zusammen auffliegen, — aufsteigen, auffliegen, aufspringen, sich erheben* AV. 4, 15, 1. ते तु कृसाः समुत्पत्य विदर्भानगमस्ततः MBh. 3, 2093. ह्योत्तमाः। समुत्पेतुराकाशम् 2794. खं समुत्पतितः क्रतुः Hariv. 12235. Bhātt. 7, 50. सर्वे समुत्पेतुरुदयुधास्ते MBh. 1, 7005 7946. आसनेभ्यः समुत्पेतुः 3, 2149. 5, 5959. अन्पस्मिन्-प्रेष्यमाणो तु पुरस्ताद्यः समुत्पेतत्। अहं किं करवाणीति स राजवसतिं वसेत् ॥ 4, 127. R. 2, 26, 6. 3, 24, 14. 33, 1. 6, 98, 11. (अश्याः) समुत्पेतुः कषाघातैः Bhātt. 14, 10. शैलाः समुत्पेतुः Bhāg. P. 7, 8, 33. R. 5, 3, 20. तद्गृह्वेगोन्मथिताः शालस्यन्दनचन्दनाः। उत्पतत्तं समुत्पेतुर्कुमुत्तं सुपुष्पिताः ॥ *erhoben sich nach ihm* 19. *sich zum Kampf erheben, einen Angriff machen* Spr. 313, v. l. 329. Kām. Nitīs. 11, 32. 13, 18. *aufgehen, von der Sonne* Kirāt. 2, 46. *aufsteigen, von Wolken* R. 5, 74, 35. *hervorspringen, hervorstürzen*: समुत्पतत्ति वल्मीकाद्याया क्रुद्धा महेरगाः MBh. 7, 4656. समुत्पत्य (नेत्राभ्यां) जलं तत्र पतितं वदनाम्बुजात् Hariv. 7068. *sich erheben, hervorbrechen* so v. a. *entstehen*: यः समुत्पतितं क्रोधं निगृह्णाति MBh. 1, 3320. fgg. Bhāg. P. 6, 4, 14. *sich herausbegeben* so v. a. *entfliehen, verschwinden*: समुत्पतिततेजस् Pañāt. I, 212.

— *उप hinfliegen, hineilen zu*: उपैदृक् धनंदां श्येनो न वंसतिं पंतामि RV. 1, 33, 2. 8, 35, 7. 9, 83, 11. 10, 123, 6. तत्पादयोरुपापत्नं Bhāg. P. 7, 2, 31. — Vgl. उपयात्, उपयातिन्.

— *नि 1) herabfliegen, sich niederlassen, sich herabstürzen, sich herablassen, sich niederwerfen*: दम्पत्यास्तदसिके। निपेतुस्ते गरुत्मतः

MBh. 1, 2094. Hit. 1, 32. *न्यपतन्मुखले ग्धाः* Bhātt. 13, 27. *तस्मिन्निपतिते भूमौ नारदे* Hariv. 9811. *उत्पतदपि वाकाशं निपतेच्च पथेच्छकम्* MBh. 3, 11414. R. 5, 13, 10. 6, 16, 77. *मातलिस्तूर्णं निपत्य धरणीतले* Arāg. 6, 7. *तस्यैव दास्या गेहे त्वं निपतिष्यस्योनिजा* Kathās. 34, 81. *नभोनिपतितामिव* Kāu. ap. 43. *निपतित्यब्रवीद्भद्राम्* R. 1, 44, 5. *निपत्य (sich niederlassen) मम प्रङ्केषु* 5, 7, 30. *निपेतुः शरीरे ऽस्य* Daç. 2, 28. *पादयोस्तस्य निपयात्* Kathās. 39, 236. Kumāras. 7, 92. Bhātr. 2, 26. *भूमौ निपतमानायाः शराणां भव मे* MBh. 13, 1501. *sich stürzen auf, herfallen über*: यं यमेषो ऽभिसंक्रुद्धः संग्रामे निपतिष्यति MBh. 4, 1572. सिंहे जिशुरपि निपतति मद्मलिनकपोलभित्तिषु गजेषु Bhātr. 2, 31. गृध्याङ्गुकान् प्रनो निपततः क्रौञ्चान्कथं वारयेत् Prāb. 93, 18. ततो निशीथे सकृसा निपत्यैवाद्यतायुधा। चौरसेना सुमरुती सार्थं वेष्टयति स्म तम् ॥ Kathās. 29, 117. *hineinstürzen in*: इह (संसारे) विषयामिषलालस मानसमार्गार मा निपत Spr. 1170. — 2) *niederfallen, niederstürzen, umfallen, fallen*: किम् निपतति Shadv. Br. 5, 9. Kauç. 63, 83. Varāh. Brh. S. 27, c, 8. अशनिः — निपतति 32, 4. उपर्यस्याः — कुमुमवष्टयः — न्यपतन् Rāga-Tab. 6, 144. Kathās. 27, 45. 40, 92. Vid. 295. प्रासाद्य विपुलास्तीक्ष्णा न्यपतत्त सकृद्यतः MBh. 1, 1169. कथमस्मद्विधे शस्त्रं निपेतत् R. 2, 63, 24. AV. 6, 90, 3. 12, 5, 26. तत्ते प्रकारा निपतत्यभीष्टणाम् Spr. 781. नदी नेरुमन्दरशिखरात् — अर्वातिले निपतती Bhāg. P. 5, 16, 20. विकुण्ठधियणात्तयोर्निपतमानयोः 3, 16, 33. यत्र (मरुतरात्रे) निपतितं पुरुषम् 5, 26, 12. निपेतुर्धरणीतले MBh. 3, 2545. निपेतुरनलम् 1, 8291. पदे निपतिते 3, 2810. जाले पुनर्निपतितः शफरः Spr. 740. न्यपतेश्च गर्भाः (vor der Zeit) Bhāg. P. 6, 8, 12. सशब्दनिपतद्गुम् Bhātt. 8, 131. मा नि प्रतं भुवंने शिम्भियाणाः AV. 12, 1, 31. R. 2, 13, 20. 72, 17, 73, 39. Suçr. 1, 120, 16. Ragh. 8, 38. Pañāt. 33, 11. एतस्याः स्तनमण्डले निपतितम् *zusammengefallen, eingefallen* Dhūrtas. in LA. 80, 15. *sich ergießen in, münden in*: बहुधाप्यागमिर्भान्नाः पन्थानः सिद्धिकेतवः। बय्येव निपतत्योषा जारुवीया श्वार्णवे ॥ Ragh. 10, 27. *fallen auf* so v. a. *sich richten auf*: तस्या गात्रे निपतिता दृष्टिस्तेषाम् MBh. 1, 7708. नेत्रजलाः पौरुषस्य तस्मिन् — निपेतुः Ragh. 6, 7. आलोके ते निपतिते पुरे Megh. 83, v. l. निपतति दृष्टि-विशिखा यावन्नेन्द्रीवरातीणाम् Prāb. 7, 4. तस्मिन् — निपेतुरत्तः करणैर्नरेन्द्रा देहैः स्थिताः केवलमासनेषु Ragh. 6, 11. — 3) *gerathen in*: (आयुः) निपतितो नक्तं मुखे भोगिनः Bhātr. 2, 82. एको बहूनां मूर्खाणां मध्ये निपतिता बुधः Kathās. 32, 56. — 4) *sich einfügen, zu stehen kommen, seinen Platz erhalten*: निपाता उच्चवचेर्धेषु निपतति Nir. 1, 4, 11. सर्वत एवाभ्यर्हितं पूर्वं निपतति zu P. 2, 2, 34. — 5) *einfallen, eintreffen, sich einstellen, eintreten* Suçr. 1, 5, 9. तस्मिन्निपतिते व्याधौ 33, 20. अन्यद्वागधेय-मतेषो रत्नयो निपतति Çak. 27, 5. मरुणाव्याधिशाकानां किमयं निपतिष्यति Spr. 432. सकृदंशो निपनति M. 9, 47. *auf Jmd fallen* so v. a. *zu Theil werden*: कलिकलप्रकतानि यानि लोके मांय निपततु विमुच्यतां तु लोकः Kumāra bei Müller, SL. 80. — 6) *zu Schanden werden, zu Nichte gehen*: मा ते स्वको ऽर्था निपेतत मोहात् MBh. 4, 2126. अहं निपतितामिव R. 5, 18, 7. (सद्म) सद्यो निपतितानन्दम् 2, 63, 28. — Vgl. निपतन, निपात, निपातिन्. — *caus. 1) niederfallen machen, herabwerfen, herabschleudern, fällen, umwerfen, werfen in, auf*: नि षेति वृत्रस्य मर्मणि वज्रमिन्द्रो अपीपतत् RV. 8, 89, 7. गिरिप्रङ्गधिर्वृत्तेन अपाकेन निपातितः। वेगवाही शरः Rāga-Tab. 3, 217. 107. मांय बाणो निपात्यताम् Mārka. P. 66, 18. 14. परस्य दण्डं नोयच्छेत्कुड्वा नैनं निपातयेत् *fallen lassen auf* so